इकाई 1 तकषि शिवशंकर पिल्लै : व्यक्तित्व और कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 तकषि : जीवनवृत्त : परिचय

1.3 साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण

1.4 मलयालम में कथा साहित्य

1.5 कृतित्व

1.6 सारांश

1.7 प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस खण्ड की यह पहली इकाई है जिसमें आप तकषि शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी हासिल करेंगे। तकषि शिवशंकर पिल्लै मलयालम साहित्य में एक ऐसा नाम है जिसने मलयालम साहित्य तथा परोक्ष रूप से भारतीय साहित्य को विश्व में उच्चतम स्तर तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ऐसे उच्चकोटि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में जो-जो घटक महत्वपूर्ण रहे हैं, उनकी चर्चा भी हम इस इकाई में करेंगे। तकषि बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार रहे हैं। उनके कृतित्व की जानकारी भी आप इस इकाई में हासिल करेंगे।

1.1 प्रस्तावना

यह खण्ड मलयालम साहित्य के प्रतिनिधि आधुनिक लेखक तकषि शिवशंकर पिल्लै पर आधारित है; जिसमें मुख्य रूप से उनके विश्वप्रसिद्ध उपन्यास चेम्मीन अर्थात् मछुआरे पर चर्चा की गई है। यह इकाई इस खण्ड की पहली इकाई है जिसमें तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन के बारे में परिचयात्मक जानकारी दी गई है। इस इकाई में सर्वप्रथम हम देखेंगे कि तकषि का आरंभिक जीवन कहाँ और कैसे बीता तथा साहित्य संस्कारों का श्रीगणेश कैसे हुआ। तदुपरांत हम तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक तत्वों के बारे में जानकारी हासिल करेंगे। किसी भी रचनाकार की किसी भी महत्वपूर्ण रचना के अध्ययन से पूर्व यदि रचनाकार के बारे में जानकारी हासिल कर ली जाए तो उसकी रचनाओं को समझने में आसानी रहती है। तो आइए, तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन पर दृष्टि डालें।

1.2 तकषि : जीवनवृत्त : परिचय

तकषि शिवशंकर पिल्लै का वास्तविक नाम है : के.के. शिवशंकर पिल्लै। तकषि शिवशंकर पिल्लै उनका साहित्यिक नाम है। लोग उन्हें तकषि के नाम से जानते बुलाते हैं। तकषि उनके गाँव का नाम है जो कि मध्य केरल के आलप्पुषा जिले के अम्पलप्पुषा तालुक में सागर के किनारे स्थित है। तकषि गाँव केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम् से उत्तर की ओर डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी पर है। इसी गाँव में तकषि का 17 अप्रैल 1912 को जन्म हुआ था। उनकी माता का नाम पार्वती अम्मा तथा पिता का नाम पोरपल्लि कलत्तिल शंकर

कुरुप था। वे अपने माता-पिता की दूसरी संतान थे। पहली संतान कन्या थी। उनके परिवार की दशा सामान्य थी। चावल की खेती मुख्य पेशा था। कृषिवृत्ति के अलावा पिता कथकली एवं तुल्लन कलाओं के जानकार थे। लगभग आए दिन घर में पुराण पारायण होता रहता था। पुराण कथाओं से तकषि का परिचय घर पर ही हुआ।

उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। इसके बाद सातवीं कक्षा तक की पढ़ाई गाँव से बारह किलोमीटर दूर समुद्री तट पर स्थित अंपलप्पुषा स्कूल में हुई। यहाँ पर अरय समुदाय से तकषि का परिचय हुआ। अरयों का जीवन-यापन मछुवारी से चलता था। उनकी कुटियाँ सटी हुई होती थीं। उनके शरीर से सदा मछली की बू आती रहती थी। दोपहर का भोजन केले के पत्ते में ले जाने की प्रथा थी। खाने की पोटली पर अकसर चींटियाँ आक्रमण कर देती थीं। चींटियों वाले हिस्से को अलग फेंक बाकी भोजन कर लिया जाता था। फेंके हुए हिस्से को हड़पने अरय बच्चे टूट पड़ते थे। वे चींटियाँ और चावल दोनों खा लेते थे। होंठो पर लगी चींटियों को हाथों से पोंछ कर देते थे। गरीबी का यह हाल था। इसी कारण शायद ही कोई अरय बच्चा सावतीं कक्षा तक पहुँच पाता था। कुछ विद्यार्थी बड़े होकर नाव, मछली जाल खरीद लेते, कुछ नाव खेने में लग जाते। कुछ तो सागर में लापता हो जाते। हाई स्कूल उन्होंने कुछ और दूरी पर वैक्कम और करुवाट्टा के स्कूलों में पूरा किया। वहाँ पर भी अरय लोग थे। चेम्मीन उपन्यास की रचना के समय अरय समुदाय के ये अनुभव प्रेरक और सहायक रहे होंगे।

बचपन से ही तकषि में लोगों के जीवन को जानने और प्रकृति के सौंदर्य का निरीक्षण करने की प्रवृति पैदा हो गई थी। जब वे वैक्कम में किराये के मकान में रहते हुए पढ़ाई कर रहे थे तब अपनी इसी घूमने-फिरने की फितरत के कारण वे नवीं कक्षा में फेल हो गये। उसके बाद वैक्कम में उनकी पढ़ाई रुक गई। इसी दौरान कोच्ची में आयोजित प्रथम समस्त केरल साहित्य परिषद में शामिल होने तकषि भी गये। यहीं पर ज्ञानपीठ से सम्मानित जी. शंकर कुरुप जैसे कवियों से उनका परिचय हुआ। साहित्य संबंधी अनुभवों की यह बड़ी शुरुआत थी। फिर उन्होंने करूवाट्टा के एन.एस.एस. हाई स्कूल में ही एस.एस.एल.सी. की परीक्षा पास की।

मलयालम के सुप्रसिद्ध नाटककार कैनिवकरा कुमार पिल्लै उस समय स्कूल के हेडमास्टर थे। किसी कक्षा में जब कभी अध्यापक नहीं होता तो वे पहुँच जाते और बच्चों को कहानियाँ सुनाने लगते। स्वयं तकषि ने इसी तरह 'काबुलीवाला' कहानी सुनने का लाभ उठाया था। कहानी की ओर प्रेरित करने वालों की स्मृति में बाद में 'कयर' नामक अपनी रचना जिन लोगों को समर्पित की है, उनमें केसरी के अलावा कैनिवकरा का नाम भी है।

हाई स्कूल की शिक्षा पूरी होने के बाद वे कानूनी पढ़ाई करने के लिए तिरुवनन्तपुरम् पहुँचे। प्लीडर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे वहीं पत्रकारिता में लग गये। इसी दौरान 'केसरी' पत्र के संपादक ए. बालकृष्ण पिल्लै से परिचय हुआ। केसरी बालकृष्ण पिल्लै एक ऐसे संपादक थे जिन्होंने मलयालियों को पश्चिमी साहित्यिक गतिविधियों से परिचित करवाया था। तकषि को भी इसका भरपूर लाभ मिला। उनकी साहित्य संबंधी संकल्पनाओं तथा वर्णननीति को पुख्ता करने में इन अनुभवों का काफ़ी योगदान रहा। 'ओर्मयुटे तीरड्ड़लिल' (स्मृति के तटों पर) नामक आत्मकथात्मक रचना में उन्होंने इस बात का ज़िक्र भी किया है।

तेईस वर्ष की उम्र में उनका पास ही के नेटुमुटि गाँव में तेक्केमुरी की रहने वाली चेंपकशेरी चिरवकल कमलाक्षि अम्मा नाम की लड़की से विवाह सम्पन्न हुआ। तकषि उन्हें 'कात्ता' नाम से पुकारते थे। उनका मानना था कि उनकी उन्नति का कारण 'कात्ता' ही है। तकषि के पाँच संतानें हुईं - चार लड़कियाँ और एक लड़का। उनके पास अट्ठाईस सेर की खेती थी। 1939 को तकषि म्यूनिसिप्ल कोर्ट के वकील बने। ये दिन उनके जीवन के बड़ी आर्थिक तंगी के दिन थे। 1950 में उनकी माँ और उससे भी पहले पिताजी की भी मृत्यु हो गई। 'रंडिडंगषि' उपन्यास के पाठ्य पुस्तक बनने तथा 'चेम्मीन' के देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने के बाद ही उनकी आर्थिक दशा में सुधार हुआ। विश्व की लगभग सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में चेम्मीन का अनुवाद हुआ।

चेम्मीन पर फ़िल्म बनने से तो तकषि की लोकप्रियता को चार चाँद लग गये। रामू कार्यात द्वारा निर्देशित 'चेम्मीन' फ़िल्म को 1964 में 'सुवर्ण मयूर' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो किसी भी मलयालम फ़िल्म को प्राप्त प्रथम पुरस्कार था। फ़िल्म में संगीत निर्देशन सलिल चौधरी ने किया था और गायक थे मन्नाडे।

स्कूली जीवन से ही तकषि ने कहानियों पर हाथ आजमाना शुरू कर दिया था। उनकी पहली कहानी 'साधुक्कल' (बेचारे लोग) नायर सर्विस सोसायटी की पत्रिका 'सर्विस' में प्रकाशित हुई। पहले उन्होंने के.के. शिवशंकर पिल्लै के नाम से लिखना शुरु किया था, बाद में उन्होंने अपना नाम बदलकर तकषि शिवशंकर पिल्लै कर लिया।

तकषि को अपने जीवन में कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए जिनमें से प्रमुख हैं : 'चेम्मीन' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (1957), 'एणिप्पडिकल' के लिए केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (1965), सोवियत लैंड नेहरू एवार्ड (1974), तथा 'कयर' के लिए वयलार पुरस्कार (1980) आदि। केरल विश्वविद्यालय और महात्मा गांधी विश्वविद्यालय ने मानद डी.लिट. प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। 1985 में 'पद्म भूषण' दे कर राष्ट्र ने उन्हें समादृत किया।

सभी दृष्टियों से तकषि का जीवन भरा-पूरा था। उनका स्वर्गवास 10 अप्रैल, 1990 को हुआ जब वे सत्तासी बरस के थे। आज तकषि का घर शंकरमंगलम 'तकषि संग्रहालय' के नाम से जाना जाता है।

1.3 साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण

तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान उनके आसपास के जीवंत माहौल का और उस माहौल को भेदने वाली उनकी तीक्ष्ण, परीक्षण दृष्टि का रहा है। छोटे से राज्य केरल में नगर, नगर प्रान्तर, कस्बा, लघु शहर, शहर प्रान्तर, ग्रामान्तर, लघु ग्राम, पहाड़ी इलाका, सागर-तट कुट्टनाड आदि इकाइयाँ निश्चित विशेषताओं से पूर्ण पारिस्थितिक मण्डल होते हैं। कुट्टनाड की अपनी अलग भौगोलिक प्रकृति और तत्संबंधित जीवनचर्याएँ होती हैं। तकषि मानते थे कि उस प्रदेश की धरती भी मानवनिर्मित है। कुट्टनाड में बारहों महीने पानी भरा रहता है। नवम्बर से मई तक खेतों की मेड़ें पानी के तल पर लक्षित हो जाती हैं। उस समय मेड़ों पर से हो कर आया-जाया जा सकता है। दूर तक फैले पानी में इधर-उधर टापू दिखाई देते हैं जहाँ लोग आबाद हैं। जून से वर्षाकाल आरंभ होता है। कुटी (घर) के अंदर तक पानी भर आता है। कुटी के अंदर ऊँचा मंच बनाकर लोग रहते हैं। मंच से सीधे पानी में उतरना पड़ता है। घर-घर में अपनी-अपनी नाव होती है। ऐसी छोटी नाव भी होती है जिसे एक बच्चा इस्तेमाल कर सकता है। पीने का पानी लाने के लिए घड़ा एवं बर्तन नाव में रखकर नाव चलाते हुए पीने के पानी तक पहुँचना होता है। खेतों से पानी रेचित करने के बाद खेती शुरु करते हैं। पुराने समय में चक्कि चलाकर और उसके बाद पम्प की सहायता से पानी का रेचन होता था। रेचन के बाद लकड़ियों एवं झाड़ियों से सीमाबंधन कर खेतों को अलग-अलग किया जाता है। तदुपरांत बीज रोपण या पौधों का रोपण शुरू होता है। कुट्टनाड की यह अपनी विशेष रीति है, जिससे उनके जीवन के क्रम को एक प्रकार की दार्शनिकता का भाव मिला है।

इसके अलावा परिवार के बुजुर्गों द्वारा बचपन में सुनी गई कुट्टनाड की कथाओं का उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान रहा है। वैयक्तिक संबंध, पारिवारिक संबंध, पारिवारिक इतिहास, निष्ठाएँ, आचार-विचार, उत्सव-त्यौहार, मिथक, कृषि अनुभव, वर्षा, जल-प्लावन की व्यथाएँ आदि अनेक ज्ञानवर्धक, रोचक कार्य एवं घटनाएँ उन कहानियों में भरी पड़ी हैं जो कि लेखक को परिपक्व, ज्ञानधनी एवं समृद्ध बनाती हैं। तकषि का विश्वास है कि बचपन में सुनी ऐसे ही कहानियों ने उनके लेखक को लेखक बनाया था।

दिन-रात कठिन परिश्रम करने वाले, ताड़ी पीने वाले, लड़ने-भिड़ने वाले साधारण मनुष्यों का उन्होंने निरीक्षण किया। उनकी वेदनाओं को उन्होंने आत्मसात किया। सबसे बड़ा दुःख मृत्यु है, इसलिए सभी कार्यों को मृत्यु से जोड़कर देखने की उनकी आदत थी। शायद यह भी एक कारण रहा होगा चेम्मीन जैसी रचनाओं में पूर्ण कलात्मक सौंदर्यानुभूति के आने का।

उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उन्होंने 'काबुलीवाला' कहानी सुनी और वे 'केसरी' पत्रिका के सम्पर्क में आए। यह वह समय था (1930-34) जब स्वतंत्रता आंदोलन अपने उफान पर था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व बढ़ रहा था। श्रमिकों ने परिश्रम के मूल्य एवं महत्व को समझना शुरु कर दिया था, उनमें आत्मगौरव एवं स्वतंत्रता बोध विकसित होने लगा था। पत्रिका कार्यालय में आते रहने वाले साहित्यकारों से की चर्चाओं से उन्हें इब्सन, चेखव, हेमिंग्वे, मोपाँसा जैसे विश्वस्तरीय पश्चिमी साहित्यकारों को जानने का मौका मिला।

उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उस वक्त संभवतः सबसे बड़ी बात जो हुई वह थी उनका मार्क्सवाद के प्रति रुझान और उसे समझने की ललक। इसी क्रम में उन्होंने प्रगतिशील साहित्य का अध्ययन किया। बचपन से ही तकषि उस भगवान का विरोध करते थे जो धनियों को अधिकाधिक सुविधाएँ प्रदान करता है और बहुतों को तो आवश्यक सुविधा से भी वंचित रखता है। इसी प्रकार अन्तर्मन के अव्यक्त भावों को चित्रित करने में तकषि को फ्राइड ने प्रभावित किया और अंधविश्वासों पर अधिष्ठित मनुष्य के जन्मसंबंधित प्रचलित विश्वासों को परिवर्तित करने में उनकी सहायता की डार्विन ने।

इस प्रकार के अनुभवों, सम्पर्कों, अध्ययन एवं ज्ञानार्जन से जो साहित्यिक व्यक्तित्व निर्मित हुआ और उसने जिन कृतियों की रचना की - वे सारी कृतियाँ इस बात की उद्घोषणा करती जान पड़ती हैं कि भूखण्ड, वंश, वर्ग, पेशा, धर्म आदि का भेद-विभेद निरर्थक है और ये भेद-विभेद मानव को सामान्य मनुष्यता से दूर कर देते हैं। किंतु फिर भी उन्होंने स्पष्ट किया कि "मुझे संतोष है कि इस सम्पूर्ण अवधि में मैं ग्रामीणजन, आम आदमी तथा शोषित कामगार के साथ रहा हूँ। मैं उनके सुख एवं दुःख में भागीदार रहा हूँ। मैंने उनकी आशाओं को दुलारा है एवं उनकी चिंताओं में हिस्सेदारी की है। जब कभी मैंने उन्हें चिंतित पाया, मैं चिंतित हुआ, संकट की घड़ी में उत्कर्ष के शिखर पर चढ़ने के लिए मैं उनके साथ था। मैं उनके साथ आनंदित हुआ और रोया भी, मैं विवादग्रस्त एवं उदास था मगर मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा।" लेकिन इसके साथ ही धनिकों, बंगलों, भवनों में रहने वाले लोगों को वे समाज का दुश्मन नहीं मानते। उनके बारे में तकषि का कहना है - "ये भवन, बंगले तथा प्रासाद जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये उपलब्धियाँ हैं। मैंने उन्हें अपने जीवन में छोड़ दिया है। वहाँ मनुष्य रहते हैं। उनकी भी आशाएँ, निराशाएँ, व्यथाएँ, चिंताएँ, हर्ष तथा नियति के उतार-चढ़ाव हैं, जिन पर उन्हें पार पाना होता है।" (पृष्ठ - 303)

इस प्रकार तकषि का जो साहित्यिक व्यक्तित्व निर्मित हुआ, उसने मलयालम साहित्य को अपनी कृतियों से विश्व के श्रेष्ठ साहित्य की पंक्ति में ला खड़ा किया है।

1.4 मलयालम में कथा साहित्य

डी एच लोरेन्स के मतानुसार बाइबिल उपन्यास है। उनके दृष्टिकोण के अनुसार ऐसा कह सकते हैं कि सारी साहित्यिक विश्व भाषाओं में उपन्यास भी हैं। लेकिन 'नोवल' शब्द से इस प्रकार की रचनाओं को सूचित नहीं करते हैं। मलयालम और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण स्वरूप उपन्यास शाखा का प्रारंभ हुआ। तब से आज तक पाश्चात्य उपन्यासों के संपर्क में किसी भी प्रकार की शून्यता नहीं आती। शेक्सपियर के 'सिंबलिन' नाटक कथावस्तु के आधार पर अप्पु नेटुंगाडी ने मलयालम के प्रथम उपन्यास कुन्दलता (1887) की रचना की। बीकन फील्ड के 'हेन्टिटा टेंपिल' और जेन आस्टिन के 'प्रइड एन्ड प्रजुडिस' से प्रेरणा पाकर ओ चन्तुमेनन ने मलयालम का लक्षणयुक्त प्रथम

उपन्यास लिखा। यह सर्वविदित है कि सर वाल्टर स्कॉट के 'ऐवानहो' की छाया सी वी रामनपिल्लै के 'मार्ताण्डवर्मा' में है। सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, हास्यात्मक, जासूसी आदि भिन्न प्रकार के उपन्यास मलयालम में प्रारंभ काल में ही पाये गये हैं।

1920 के पश्चात् उपन्यास शाखा नवोत्थान के पथ पर प्रवेश करती है। विक्टर ह्यूगो के ले मिराब्ले ने प्रगत साहित्य शाखा को प्रोत्साहित किया था। राजा एवं रईस मात्र नहीं भिखारी एवं लफंगे भी नायकपद के योग्य हैं। यह जानकारी प्राप्तकर उस प्रकार के अनेक नायक पात्र प्रत्यक्ष होने लगे। विश्व-विख्यात अगणित उपन्यास मलयालम में अनूदित होते रहे। ले मिशब्ले, अन्नाकरेनिना, युद्ध एवं शान्ति, अपराध और दंड, कैरमासोव सहोदर, जीन किस्टोफर, मदाम बोवेरी, सान्धिला, प्रेमी, भली धरती, मिट्टी की बढत आदि कुछ उदाहरण हैं। स्वतंत्रता संग्राम के कार्यक्रम और मार्क्सवाद के प्रचार ने संवेदनशीलता को परिवर्तित किया। सामाजिक नीति एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता उपन्यास के विषय बने तो केरल की सामाजिक दशा इतनी अशांतिपूर्ण रही कि उसको आत्मसात कर सके। इसलिए मलयालम के साहित्यकार जल्दी ही सामाजिक क्रांति के वक्ता बने।

मलयालम भाषा उन पाश्चात्य कृतियों से भी परिचित होने लगी जिनमें उपन्यास का शिल्प, लक्ष्य आदि कार्यों का विवरण मिलते थे। ई.एम.फोस्टर का Aspects of Novel, एड्विन मुयिर का Structure of Novel, पेर्सी लबोक का Craft of Fiction आदि ग्रंथ अंग्रेज़ी शिक्षा के साथ मलयालम में भी पहुँचे थे। 1930 में एम.पी.पोल ने अपना ग्रंथ 'नोवल साहित्यम्' प्रकाशित किया जो उपन्यास कला पर लिखी गयी प्रथम मलयालम रचना है। एम.पी.पोल अंग्रेज़ी के अध्यापक थे। Aspects of Novel जैसी कृतियों की सहायता से उन्होंने अपना ग्रंथ तैयार किया था। 1930 के पूर्व विद्याविनोदिनी, भाषा पोषिणी जैसी पत्रिकाओं में उपन्यासों पर विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित होते थे। उनमें उल्लखनीय हैं- आख्यायिका अथवा प्लोट (1918) एम.पी.पोल ने उपन्यास की परिभाषा यों दी है - 'उपन्यास वही गद्य ग्रंथ है जिसमें मानव के विकार - विचारों को प्रकाशित किया जाता है और संभाव्य कथानक का आख्यान कर काव्यानुभूति उत्पन्न कर देता है।' यह परिषाभा ई.एम.फास्टर के अनुकरण पर है। केसरी बाल कृष्ण पिल्लै ने कहा - 'समसामयिक जीवन का चित्रण अथवा निरूपण ही उपन्यास है।' केसरी ने पाश्चात्य उपन्यास संकल्पना से मलयालम साहित्य को परिचित कराया।

तकषि नामक उपन्यासकार को इसी साहित्यिक परिसर ने मार्गदर्शन दिया था। टॉलस्टाई, देस्ताबोव्स्की, हेमिंग्वे, मोपोसांग, एमिलीज़ोल, बालज़ाक आदि प्रतिभाशाली साहित्य नायकों ने उन्हें अधिक शक्ति एवं अभिव्यक्ति प्रदान की। श्रमिक, भिखारी, भंगी आदि को नायक बनाया गया। वेश्या के प्रेम का चित्रण किया। मान्यता के परदे से आच्छादित कपटता को व्यक्त किया गया। ये कथाबीज उस काल के साहित्य क्षेत्र में प्रवेश पा नहीं सकते थे। लेकिन पश्चात्य उपन्यासों की सहायता से तकषि ने यह सब कर दिखाया। उस काल के विख्यात उपन्यासकार केशवदेव, वैक्कम मुहम्मद बशीर, पोट्टक्काट आदि भी इस नवोत्थन प्रक्रिया में सहयोगी बने।

1.5 कृतित्व

तकषि के कुल कृतित्व पर यदि हम नज़र डालें तो वह संख्या में एक व्यक्ति द्वारा रचित रचनाओं की दृष्टि से भी बहुत पर्याप्त हैं। लेकिन तकषि का सारा लेखन एक जैसा नहीं है। उनकी रचना-यात्रा के भिन्न-भिन्न पड़ाव हैं और इन पड़ावों में उनकी रचनात्मकता ने भिन्न-भिन्न रूप अख्तियार किया है। आइए, तकषि की रचना-यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर नज़र डालें।

प्रथम चरण

तकषि का आरंभ का जो लेखन है, वह उनके बाद के लेखन से काफ़ी भिन्न है। प्रथम चरण के लेखन में उनकी उन कहानियों/उपन्यासों की चर्चा की जा सकती है जिन पर उस समय की बंगला कहानियों का रूमानी प्रभाव स्पष्ट है। इस संदर्भ में उनकी सन् 1931 में 'केसरी'

की बंगला कहानियों का रूमानी प्रभाव स्पष्ट है। इस संदर्भ में उनकी सन् 1931 में 'केसरी' में छपी कहानी 'विवाह के दिन' उल्लेखनीय है, जिसका घटनास्थल न तकषि गाँव है, न त्रिवेन्द्रम नगर। यह उत्तर में गंगा के किनारे किसी स्थान की कहानी है। बंगला के रूमानी प्रभाव के साथ-साथ तकषि पर विदेशी विशेषकर फ्रांसीसी कथाकारों (मोपांसा, ज़ोला) का गहरा असर था जो इस दौर की रचनाओं में प्रतिफलित हुआ दिखाई पड़ता है। 'बिन नाम और तारीख का एक पत्र' पर स्टीफन ज्वीग की 'लास्ट लेयर' का सीधा प्रभाव है। 'पिता कौन है' भी इसी प्रकार की कहानी है जिसमें तकषि मध्यवर्गीय नैतिकताओं को झकझोरते दिखाई देते हैं। इसी दौर में उनकी 'बाढ़ में' कहानी है जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें वे सारे तत्व मौजूद है जिन्होंने तकषि को आगे चलकर महान लेखक बनाया। रचना के इस पहले दौर में तकषि उपन्यास भी लिखने लगे थे। उनकी पहली प्रकाशित कृति उपन्यास ही है जिसका शीर्षक है 'प्रतिफलम' (1934) और दूसरा उपन्यास 'पतित पंकजम' जो 1935 में प्रकाशित हुआ। 1936 में एक तीसरा उपन्यास 'परमार्थगल' भी प्रकाशित हुआ। 'प्रतिफलम' उपन्यास ने प्रकाशित होते ही काफ़ी विवाद खड़ा कर दिया। तकषि के ये तीनों ही उपन्यास मध्यवर्गीय नैतिकता पर सीधे चोट करते दिखाई पड़ते हैं, इसलिए इन की आलोचना होना स्वाभाविक ही था। 'प्रतिफलम' में एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने भाई को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए स्वयं देह-व्यापार करती है, 'पतित पंकजम' में एक लड़की को बारह साल की उम्र में ही वेश्यावृत्ति अपनाने को विवश होना पड़ता है। इसी तरह 'परमार्थगल' उस औरत की कथा है जो दो अवैध बच्चों को जन्म देती है - एक विवाह से पूर्व बलात्कार के कारण और दूसरा विवाह के बाद। यह माना जाता है कि अपनी सीधी सरल शैली के कारण इन उपन्यासों ने मलयालम गद्य लेखन में एक नये युग का सूत्रपात किया।

दूसरा चरण

इस दूसरे चरण में तकषि की प्रमुख रचनाओं में 'तोट्टियुडे मकन' (भंगी का बेटा, 1945), 'रंटटिंड़षी' (दो सेर धान, 1948), 'तलयोडु' (कपाल, 1948) तथा 'तैंडीवर्गम' (भिखारी वर्ग, 1950) उपन्यास के रूप में प्रमुख हैं। और कहानी संग्रहों में 'अतियीषुक्कुकल' (अन्तर्धारा, 1945), 'नित्यकन्निका' (अविवाहिता, 1945), 'चगानिकल' (मित्र, 1945) तथा 'इन्कलाब' (1950)। तकषि के रचनाकाल का यह वह दौर था जब समाज में स्थितियों में काफ़ी तेज़ी से बदलाव आ रहा था। साहित्य में पुरोगमन साहित्य का प्रभाव बढ़ रहा था। आम आदमी अपनी समस्याओं के साथ साहित्य की विषयवस्तु बन रहा था। तकषि विदेशी प्रभाव की आलोचना झेल चुके थे। इन सब कारणों से तकषि के लेखन में एक नया मोड़ आया जो इस युग के लेखन में स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। 'भंगी का बेटा' एलैप्पी शहर के भंगियों की एक ऐसी यथार्थवादी कहानी है जिसमें एक भंगी चुहल मुत्तु ने नारकीय जीवन का अनुभव किया है, अपने पिता की लाश कुत्तों द्वारा खाई जाती देखी है। वह चाहता है कि उसका बेटा इस नरक से उबर आए इसलिए वह भंगियों का संगठन बनाकर आंदोलन के द्वारा भंगियों के जीवन में सुधार लाने का प्रयास करता है। किंतु आंदोलन के थोड़ा सफल होते ही आंदोलन को स्वार्थहित तबाह कर देता है और स्कूल में डाला गया उसका बेटा वहाँ से बहिष्कृत कर दिया जाता है। अंततः उसका बेटा भंगी ही बनता है। इसके बाद आया तकषि का उपन्यास 'दो सेर धान' जिसने तकषि को कृषि जीवन की यथार्थपरक संवेदनशील तस्वीर उतारने के कारण मलयालम के अग्रणी उपन्यासकारों की श्रेणी में ला खड़ा किया है।

इस दौर में तकषि पर एक ओर तो मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव लक्षित होता है, दूसरे उनकी यह समझ भी कि साहित्य द्वारा सामाजिक शक्तियों में हस्तक्षेप किया जा सकता है उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती दिखाई देती है। वे मानते हुए दिखाई पड़ते हैं कि साहित्य में समस्या के साथ समाधान भी होना चाहिए। हालाँकि उनकी यह सोच बाज़दफा उनकी रचनाओं के खिलाफ ही जाती दिखलाई पड़ती है। इसी तरह प्रेमचंद की रचनाओ में नियति के जिस तत्व को वे नकारते हैं, वह उनकी रचनाओं में आए बिना भी नहीं रह पाता। तकषि के इस दौर के लेखन पर एक समालोचक का यह कथन उचित ही है कि 'यह ठीक है कि बंगला के रूमानी और फ्रांसीसी के यौन प्रभाव को तकषि ने काफ़ी पीछे छोड़ दिया और अब

लेकिन साथ ही राजनीतिक प्रभाव के कारण लेखन में वैचारिक तत्व का बाहुल्य रहा जिसने उसके कलात्मक पक्ष को काफ़ी दबा दिया।'

तीसरा चरण

लेकिन तकषि के तीसरे चरण के दौर के लेखन में तकषि वैचारिक पूर्वाग्रह से मुक्ति पा लेते हैं। यही कारण है कि वे सृजनात्मकता की ऊँचाइयों को छूने में सफल रहे। चेम्मीन (1955) के प्रकाशन के साथ ही उनकी रचना-यात्रा का तीसरा दौर शुरु होता है।

मलयालम उपन्यास शाखा को तकषि की देन

तकषि महाकथाकार हैं। साठ वर्ष वे कथा कहते रहे। पाँच सौ कहानियाँ, अड़तालीस उपन्यास, दो आत्मकथात्मक रचनाएँ, एक यात्रा विवरण, एक नाटक उनकी रचानाएँ हैं। आत्मकथा, यात्राविवरण आदि अनेक विधाएँ हैं, तो भी जब तकषि कहने लगते हैं तो वे सब कहानी बन जाती हैं। तकषि बड़ी सरलता से कहानियाँ कहते रहे जैसी कोई निकट बैठकर दुःख-सुख बतियाता है।

पहले वे कहानियाँ लिखने लगे। कविता पर भी प्रयोग किया है। लेकिन बीच में छोड़ दिया। जब वे स्कूल में पढ़ते थे तब से कहानी लिखने लगे। सारी की सारी दुःखपूर्ण कथाएँ। नित्यकन्यका, इनकलाब, घोषयात्रा, मानचुवट्टिल, पतिव्रता, प्रतीक्षकल, चंड़ातिकल, पुतुमलर, चंड़तिकल, अडियोषक्कुकल, ज्ञानपिरन्न नाड, चरित्रसत्यंगल आदि अनेक कहानी संकलन है। वे सब तकषि की कहानियाँ, चुनी कहानियाँ नामक ग्रंथ में अनन्तरकाले में प्रकाशित हुई हैं। 'तोट्टिल्ला' (पराजित नहीं हुआ) नामक एक नाटक लिखा। नाटकीयता से पूर्ण कहानियाँ लिखने के कारण नाटक रचना में उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया। अमरीका पर्यटन के अनुभवों के आधार पर अमेरिकन तिरश्शीला। (अमेरिकन पर्दा) लिखा। आत्मकथात्मक दो रचनाएँ उन्होंने लिखीं। बडी विनम्रता से उन्होंने लिखा है कि आत्मकथा लिखने का महत्व मुझ में नहीं है, इसलिए कुछ अनुभवों को आलेखित कर रहा हूँ। स्मृति के तटों पर और मेरा वकील जीवन उनकी आत्म कथापरक रचनाएँ हैं। एक ही साथ दोनों को पढ लेने पर तकषि के संपूर्ण जीवन का बड़ा हिस्सा परिचित हो जाता है। बाकी रचनाएँ सबके सब उपन्यास हैं। लंबे चौडे रूप में अधिकाधिक कहने पर भी और कहते जाने की भावतीव्रता तकषि के उपन्यासों में मिलती हैं।

अड़तालीस उपन्यास लिखना किसी भी भाषा साहित्य में एक असाधारण बात है। लेकिन तकषि ने उसे कर दिखाया। सब भिन्न भिन्न विषयों को केन्द्र बिन्दु बनाकर। उनकी निरीक्षण क्षमता अपार थी। वे बड़े तीव्र अन्तर्मुखी नहीं थे। चारों तरफ़ के मानव को देखना, उनका परिचय प्राप्त करना, उनके सुख-दुखों की जानकारी लेना और उन्हें मन के किसी कोने में सुरक्षित रखना - इतने कार्य को बडी अवधानता से करते रहे। इसलिए सौ मनुष्यों की कथा कहने की शक्ति उन्हें प्राप्त हुई।

1934 में तकषि का अगला उपन्यास 'त्याग का फल' प्रकाशित हुआ। अगले वर्ष में 'पतित पंकज' निकाला गया। 1934 से 1998 तक उनके अड़तालीस उपन्यास प्रकाशित हो गये। औसतन डेढ वर्ष में एक उपन्यास। सुशील, परमार्थ, विल्पनक्कारी (बेचनेवाली) तलयोड (खोपड़ी) तोट्टियुडे मकन (भंगी का पुत्र) रंडिड़ंगषि (दो सेर) तेंडिवर्गम (भिखमंगे) अवन्टे स्मरणकल (उनकी यादें) चेम्मीन, औसेप्पिन्टे मक्कल (औसेप की सन्तानें) अंचु पेण्णुंगल (पाँच औरतें) जीवितम सुन्दरमाणु, पक्षे (जीवन सुन्दर है, लेकिन) एणिप्पडिकल (सीढियाँ) धर्मनीतियों अल्लजीवितम् (धर्मनीति ? नहीं जीवन) पाप्पिअम्मयुम मक्कजुम (पाप्पियम्मा और बच्चे) माँसत्तिन्टे विलि (माँस की पुकार) अनुभ्वड्ड़ल् पालिच्चकल (अनुभव और गलतियाँ) आकाश, चुक्कु (सोंठ) व्याकुलमाला, नेल्लुम तेड़ड़युम (चावल और नारियल) पेण्णु पेण्णयि पिरन्नाल (औरत औरत बन जने तो) नुरयुम पतयुम (फेन और बुदबुद) कोडिप्पोय मुखड्डल (टेढ़े मुखड़े) कुरे मनुष्य रूटे कथा (कुछ मनुष्यों की कथा) अकतलम (अन्दर का अहाता) पुन्नप्र वयलारिनु शेषम् (पुन्नप्र वयलाकर के बाद) लघ्घु नोवलुकल (पाँच

लघु उपन्यासों का समाहार) कयर, बलूणुकल (बलूण) ओरू मनुष्यन्टे मुखम् (एक मनुष्य का मुख) ओरू प्रेमतिन्टे बाकी (एक प्रेम की बाकी) एरिञ्ञडङ्ड़ (जलकर थम जाना) अषियाक्कुरूक्कु (उलझे फंदे) आदि अनेक विख्यात उपन्यास हैं। इनमें अतिविख्यात रचनाएँ हैं:- पतित पंकज, तोट्टियुटे मकन, रंडिङ्गषि, चेम्मीन, औसेप्पिन्टे मक्कल, एणिप्पडिकल, अनुभ्वड्ड़ल पालिच्चकल, चुक्कु, कयर, बलूणुकल आदि। इनमें से बहुतेरों की फ़िल्में बनी हैं।

किसी भी साहित्य में उपन्यासों की संख्या भी अधिक है। मलयालम साहित्य भी इससे भिन्न नहीं है। उपन्यासकारों की संख्या भी अधिक है। लेकिन मौलिक प्रतिभावालों को चुनने पर संख्या कम पड़ती है। एक लेखक की साहित्यिक भेंट का मूल्यांकन कुछ विशिष्ट कार्यो के आधार पर किया जाता है। उनमें कुछ हैं - एक नयी रीति का प्रारंभ करना, मार्गान्तर की सृष्टि करना, विख्याति के कारण अनुकरणीय होना, मौलिक प्रति के कारण अननुकरणीय होना, व्यक्तिरिक्त विशेषता का धनी होना आदि। तकषि के संबंध में ये सारी विशिष्टताएँ सही निकलती हैं।

तकषि की सबसे बडी विशिष्टता उनकी अपनी अभिव्यक्ति शैली है। कुट्टनाड की परिस्थिति, संस्कृति एंव इतिहास के तथ्यों से रूपायित है उनकी शैली जिसे दूसरा कोई अपना नहीं सका है। रंडिङंगषि नामक उपन्यास में और अनेक कहानियों मे यह विशिष्टता व्यक्त होती है। 'कयर' नामक उपन्यास में लगभग दो सदियों की कहानी बतायी गयी है। उसकी सबसे बडी विशिष्टता यही है कि उसमें काल के अनुरूप भाषा की सृष्टि की गयी है। इसी विशिष्ट शैली के कारण उनके उपन्यासों को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त होती है। मलयालम प्रदेश, विशेष कर कुट्टनाड उनके उपन्यासों में स्वयं कथापात्र के रूप में प्रत्यक्ष होता है।

विषय वैविध्य उनकी रचनाओं को आकर्षक बनाता है। एणिप्पडिकल, चेम्मीन, चुक्क, अनुभवड्डल पालिच्चकल आदि उपन्यास इस के उदाहरण हैं। अम्पलप्पुषा, तिरूवनन्तपुरम जैसे विभिन्न स्थानों में रहकर तकषि ने जो अनुभव प्राप्त किये उन्हीं के कारण वे इसके लायक बने। नब्बे प्रतिशत उपन्यासों में सामाजिक जीवन का चित्रण पाया जाता है। लेकिन साधारणतया उपन्यासकार ने अस्वस्थ भावों को हटाकर पाठकों को रस प्रदान करने के लिए अनेक उपन्यासों की रचना की है। नैतिकता की ईमानदारी उन्हें प्रियकर लगती थी। इसलिए बनावटी नैतिकता की क्रियाओं का उन्होंने बड़ी स्पष्टता से चित्रण किया है। यह रीति सामाजिक मन को विह्वल करनेवाली थी जैसे आधी रात को सूर्योदय होता है।

स्वतंत्रता, समता, सौहार्द जैसे आशयों को और श्रमिक वर्ग के अधिकारों का तकषि ने अपने उपन्यासों के द्वारा प्रचार दिया। किसी एक दल के सदस्य बनकर नहीं लेकिन सामाजिक हित चाहने वाले और मनुष्यतत्व को महत्व देने वाले व्यक्ति के रूप में समाज के प्रति अपने दायित्व को वे निभा रहे थे। सर्वहारा, बेरोज़गार, भंगी, भिखमंगे, वेश्याएँ आदि उनके उपन्यासों के पात्र बने। तकषि की दृष्टि में ये सारे पात्र सभी प्रकार के नागरिक अधिकार रखनेवाले मानव हैं। नायक संकल्पना में यही नया परिवर्तन था। कुलीन, संभ्रान्त, कुबेरे, प्रतापी, सुन्दर आदि वेशेषण नायक के लिए आवश्यक थे, लेकिन तकषि ने उन सब का निराकरण किया। पर, इन विशिष्टताओं से मुक्त लोग भी उनके उपन्यासों के नायक बने। इस प्रकार तकषि अपने उपन्यासों में समाज का समग्र चित्र प्रस्तुत कर सके।

तकषि ने इस प्रकार के उपन्यास लिखे जो जादुई शक्ति से भरे थे और पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकें। उनके कुछ उपन्यासों की यह भी विशिष्टयता थी कि दो-तीन महीनों में उनका दूसरा संस्करण निकलता था। तकषि ने जनता की कहानी कही। उस कहानी को बडी सरलता से और सरसता से उन्होंने कहा। उनके समीक्षकों ने स्वीकार किया है कि उन सभी रचनाओं में यह गुण विद्यमान है।

तकषि की उल्लेखनीय देन यही है कि मलयालम उपन्यास को उन्होंने विश्व उपन्यास की ऊँचाई तक पहुँचाया। विश्व भाषाओं में प्रवेश प्राप्त दूसरा कोई मलयालम लेखक नहीं है। चेम्मीन जैसी विश्वविख्यात दूसरी मलयालम रचना भी नहीं है। तकषि ने मलयालम उपन्यास शाखा को जो देन दी है वह अन्यादृश अवश्य है।

चेम्मीन जैसी विश्वविख्यात दूसरी मलयालम रचना भी नहीं है। तकषि ने मलयालम उपन्यास शाखा को जो देन दी है वह अन्यादृश अवश्य है।

1.6 सारांश

आपने देखा किस प्रकार तकषि शिवशंकर पिल्लै अपनी गहन संवेदनात्मक दृष्टि और अपने लोगों से असीम प्रेम के बलबूते पर सृजनात्मक लेखन की अतुलनीय ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं। उनका जीवन आम लोगों की तरह साधारण जीवन ही रहा है। लोगों के सुख दुख पीड़ाएँ, अभाव को उन्होंने करीब से देखा और जाना है। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उनके आसपास के इस माहौल ने और उनके अपने जीवन ने भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उनकी साहित्यिक समझ, जीवन दृष्टि, अनुभव की परिपक्वता के साथ बदलती रही है। किंतु अंत तक अपने लेखन में जिस चीज़ का उन्होंने कभी साथ नहीं छोड़ा वह था - आम आदमी को और उसके सुख दुख भरे जीवन को ही अपने साहित्य के केंद्र में रखना।

1.7 प्रश्न

1 तकषि के जीवन परिचय एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2 तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक घटक कौन कौन से रहे हैं ?